Gyanvividha, Vol.-2; Issue-4 (Oct.-Dec.) 2025 : PP-223-227

ज्ञानविविधा

कला, मानविकी और सामाजिक विज्ञान की सहकर्मी-समीक्षित, मूल्यांकित, त्रैमासिक शोध पत्रिका

ISSN : 3048-4537(Online)
3049-2327(Print)
IIFS Impact Factor-2.25
Vol.-2; Issue-4 (Oct.-Dec.) 2025
Page No.-223-227
©2025 Gyanvividha
https://journal.gyanvividha.com

Author's :

डॉ. कुसुम कुमारी
दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर.

Corresponding Author :

डॉ. कुसुम कुमारी
दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर.

अभिज्ञानशाकुन्तलम् में नायिका शाकुन्तला का सौन्दर्य एवं प्रकृति प्रेम

अभिज्ञान शाकुन्तलम् महाकवि कालिदास विरचित विश्व साहित्य का प्रसिद्ध नाटक है। जिसका कथानक लेखक द्वारा महाभारत के आदिपर्व से ग्रहण किया है। यह सात अंकों में विभक्त एक मार्मिक नाटक है, जो पाठकों के हृदय को आनन्दित कर देता है। इसके माध्यम से कवि ने प्रकृति के पंचतत्वों का उल्लेख किया है। जल, पृथ्वी, वायु, अग्नि व आकाश का उल्लेख किया है। मार्मिकता, लौकिकता, रमणीयता एवं प्रकृति पुत्री का प्रेम वर्णन जो इस नाटक में है, वह अन्य जगह देखने को नहीं मिलता है। यह संस्कृत साहित्य जगत की अनुपम कृति है जिसमें कवि द्वारा नायिका को प्रकृति पुत्री कहकर सम्बोधित किया है। नायिका शाकुन्तला प्रकृति की गोद में महर्षि कण्व द्वारा प्राप्त की गई थी। जिसका पालन-पोषण आश्रम में ही हुआ है। नायिका शाकुन्तला महर्षि कण्व की पालिता पुत्री है। कवि द्वारा नायिका को एक आदर्श नारी प्रकति-प्रेमी के रूप में दर्शाया है, जो मूल कथा से भिन्न है।

मूल कथा में नायिका के चरित्र को दूषित किया गया है। तपोवन में पालिता होने के कारण उसका प्रकृति से घनिष्ठ सम्बन्ध है। वह वृक्ष, लताओं, पुष्प, वनस्पतियों मृगादि पशुओं से अत्यधिक प्रेम करती है। शाकुन्तला जब पुष्प लाताओं का संचय करती है, तो दुष्यन्त उसको वृक्ष की ओट से देखकर कहता है-

"सरसिजमनुविद्धं शैवलेनापि रम्यं,
मालिनमपि हिंमाशोलक्ष्म्यलक्ष्मी तनोति।
इयमधिकमनोज्ञा वल्कलेनापि तन्वी,
किमिव हि मधुराणां मण्डनं नाकृतिनाम्।।"[1]

शकुन्तला शैवाल से ढ़की हुई कमल पुष्प के समान सुन्दर प्रतीत हो रही

है मलिन होते हुए भी चन्द्रमा कलंक के द्वारा अत्यधिक सुशोभित हो रहा है। उसी प्रकार वल्कल वस्त्रों के द्वारा वह और सुन्दर लग रही है। नायिका शाकुन्तला कहती है कि केसर का यह लघुत्तम वृक्ष मुझे शीघ्रता की ओर संकेत कर रहा है शकुन्तला कहती है केवल पिता कण्व की आज्ञा ही नही इन लताओं, पौधों एवं वृक्षों के प्रति मेरा भी प्रेम सगे भाइयों के समान है। यह मेरा प्रेम ही जल सेचन का कारण है। इस नाटक में कवि ने शाकुन्तला का प्रकृति के प्रति अटूट प्रेम दर्शाया है -

"स्तनन्यस्तोशीरं शिथिलितमृणालैकवलयं,
प्रियायाः साबाधं किमपि कमनीयं वपुरिदम्।
समस्तापः कामं मनसिजनिदाघप्रसरयोः,
न तु ग्रीष्मस्यैवं सुभगमपराद्धं युवतिषु।।"[2]

नायिका शाकुन्तला दिन में तीव्र धूप होने से अपनी सखियों के साथ में मालिनी नदी के तट पर लताकुंजों की छाया में बैठी हुई है। वह अपना अत्यधिक समय पुष्प, जल सेचन लताओं व वृक्षो पौधों के साथ व्यतीत करती है। नदी के तट परशीत मन्द-मन्द वायु के कारण नायिका को उष्णता का आभास नहीं हो रहा है। फिर भी ग्रीष्म ऋतु के कारण नायिका का शरीर शिथिल व पतला हो रहा है। जिस कारण वह कमजोर लग रही है। जिसको देखकर नायक दुष्यन्त कहता है कि शकुन्तला पुष्पों के बिछोने से युक्त शिला पर लेटी हुई अपनी सखियों द्वारा सेवित की जा रही है। नायिका शाकुन्तला कमलिनियों की पत्तियाँ वायु द्वारा सुख प्रदान कर रही है। कवि ने शाकुन्तला का वर्णन करते हुए लिखा है- नायिका शाकुन्तला स्तनों पर लगाये गये लेप के सदृश कमजोर कमलनाल पंखुड़ी से युक्त शिथिल व कमजोर प्रतीत हो रही है। यौवनावस्था एवं ताप समान होने पर भी शकुन्तला को ग्रीष्म ऋतु अत्यधिक पीड़ा दे रहा है-

"रक्षितव्या खलु प्रकृतिपेलवा प्रियसखी।
को नामोष्णोदकेन नवमालिकां सिंचति।।"[3]

नायिका शाकुन्तला महर्षि काश्यप के आश्रम में अपने दोनों सखियां प्रियंवदा व अनुसूया के साथ रहती है। वह प्रकृति के लताओं से भी कोमल हृदय वाली है, जितना प्रेम शकुन्तला पुष्प, वन लताओ, वृक्षों से करती है। उतना ही प्रेम उसकी दोनों सखियां नायिका शकुन्तला से करती है। शकुन्तला नवमालिका के सदृश सुकोमला है, उसे दुर्वासा ऋषि द्वारा दिये गये शाप की जानकारी नहीं है। अनुसूया प्रियंवदा से कहती है कि हे सखी हमें शकुन्तला की रक्षा करनी चाहिए इसके प्रत्युत्तर में प्रियंवदा कहती है सखी तुम सत्य कह रही हो। कोई भी व्यक्ति लाताओं को गर्म जल से नहीं सींचता है, उसी प्रकार हमें भी शकुन्तला को शाप की घटना नही बतानी है। कवि ने इन पंक्तियों के माध्यम से बताया है कि नायिका शकुन्तला प्रकृति प्रेमी होने के साथ ही सुकोमल हृदय वाली पुत्री है-

"अन्तर्हिते शशिनि सैव कुसुमद्वती में,
दृष्टि न न नन्दयति संस्मरणीय शोभा।
इष्ट प्रवास जनितान्यबला जनस्य।
दुःखानि नूनमतिमात्र सुदुःसहानि।।"[4]

कवि ने नायिका शकुन्तला की तुलना कुमुदनी से की है। नायिका अपने प्रियतम् राजा दुष्यन्त से भी अत्यधिक प्रेम करती है। जब राजा दुष्यन्त हस्तिनापुर में चला जाता है तो शकुन्तला भी उसी कुमुदनी की तरह हो जाती है जो चन्द्रमा में छिप जाने पर अपनी सुन्दरता, नष्ट कर देती है। शकुन्तला भी अपनी आनन्द मथी मुस्कान का त्याग कर चुकी है। प्रियजनों के दूर होने पर दुःख अत्यधिक असहनीय हो जाता है वह अपनी सखी के प्रति चिन्तित है। वह सौम्य स्वभाववाली नायिका शकुन्तला को अपने से दूर नहीं करना चाहती है-

"दुष्यन्ते नाहितं तेजो दधानां भूतये भुवः।

अवेहि तनयां ब्रह्मनग्निगर्भा शमीमिव।।"[5]

महाकवि कालिदास ने शकुन्तला को नायिका के रूप अत्यन्त स्वभाव वाली सौम्य प्रकृति की कन्या बताया है जो वास्तविक कथानक से विपरीत गुणों वाली है। इस नाटक में कवि ने नायिका को अग्नि धारण करने वाली शमीवृक्ष के समान बताया है, जो पवित्र, ऊर्जावान, एवं शक्तियुक्त होता है। पिता कण्व सोमतीर्थ से लौटने के पश्चात् अपने आश्रम में आने पर पुत्री शाकुन्तला का आलिंगन कर उसे योग्य एवं विद्या के समान मूल्य धरोहर बताते है और कहते है। पुत्री तुम इस जगत के कल्याण के लिए राजा दुष्यन्त द्वारा आधान किये गये ताज को धारण करने वाली हो। शकुन्तला ने अपने आश्रम के किनारे पर मौली श्री पुरुष का पौधा सींचित किया है, जो आम्रवृक्ष के अत्यधिक निकट है।

प्रियंवदा एवं अनुसूया द्वारा अपनी प्रिय सखी शकुन्तला को मांगलिक पात्र में बैठाकर तैयार किया जाता है तथा आभूषणों के रूप में आश्रम में स्थित सुन्दर व सुलभ प्रसाधन बनलताओं, पुष्पों का प्रयोग किया जाता है-

क्षौमं केनचिदिन्दुपाण्डुतरुणां मांगल्यमाविष्कृतं।
निष्ठयूतश्चरणोपभोग सुलभो लाक्षारसः केनचित्।।
अन्येभ्यो वनदेवता करतलैरापर्वभागोत्थितैः
दत्तान्याभरणानि तत्किसलयोद्भेद प्रतिद्वन्दिभिः।।[6]

शकुन्तला प्रकृति स्नेही है। वह आश्रम में रहती है लाताओं, पुष्पों, वृक्षों को प्रतिदिन सींचित कर उन्हें पोषित किया है। शकुन्तला के विदाई के समय वह भी अपना कर्तव्य पूर्ण करना चाहते है किसी वृक्ष ने चन्द्रमा के सदृश शुभ्र मांगलिक रेशमी वस्त्र भेंट किये। नायिका को सुन्दर व अलंकृत बनाने के लिए किसी वृक्ष लाताओं ने चरणों को शोभायमान बनाने हेतु महावर दिये, अन्य वृक्षों ने मणिबंध तैयार कर सुशोधित किया। नवपर्ण किसलियों से वनदेवताओं द्वारा आभूषण प्रदान कर शकुन्तला को सुन्दर बनाया गया। कवि ने वृक्ष लताओं का नायिका के प्रति अपनी भगिनी सदृश प्रेम प्रकट कर एक सजीव व मार्मिक चित्रण किया है। जो पाठक के सहृदय को आनन्दित करता है-

यास्यत्यद्य शकुन्तलेति हृदयं संस्पृष्टमुत्कण्ठ्या,
कण्थः स्तम्भितवान्पवृतिकलुशचिन्ता जडं दर्शनम्।
वैक्लव्यं मम तावदीदृशमिदं स्नेहादरण्यौकसः,
पीड्यन्ते गृहिणः कथं नु तनया विश्लेषदुःखैर्नवैः।।[7]

कवि ने नायिका की सुन्दरता एवं प्रकृति के प्रति उसका प्रेम नाटक के माध्यम से दर्शाया है। नायिका प्रकृति पुत्री होने के साथ महर्षि कण्व की पालिता पुत्री भी है जिस प्रकार वनलाताओं, वृक्षों द्वारा उसकी विदाई पर दुःख प्रकट किया, उतना ही दुःख महर्षि कण्व को भी शकुन्तला के दूर जाने पर हो रहा है। उनका हृदय अत्यधिक व्याकुल है। अश्रुपात से गला रुन्ध गया है। वन आश्रम में रहने वाले ऋषि की स्नेहवश विकलता को कवि द्वारा मार्मिक चित्रण किया गया है। ऋषि का विरह से दुःखी होना, वन लाताओं एवं पुष्पों द्वारा शकुन्तला को आभूषण प्रदान किया एवं वनदेवताओं द्वारा नायिका के लिए आभूषण तैयार करना कवि की दूर दृष्टि एवं प्रकृति के प्रति प्रेम प्रकट करना है। नायिका शकुन्तला द्वारा आश्रम के उद्यान में जाकर सींचने का कार्य करना एवं उन्हें अपने भ्राता के समान कहना, नायिका का प्रकृति के प्रति प्रेम प्रकट करता है-

पातुं न प्रथम व्यवस्यति जलं युष्माष्वपीतेषु या,
नादते प्रियमण्डनापि भवतां स्नेहेन या पल्लवम्।
आधे वः कुसुमप्रसूतिसमये यस्या भवत्युत्सवः।

सेयं याति शकुन्तला पतिगृहं सर्वरनुजायताम्।।[8]

कवि द्वारा शकुन्तला का प्रकृति के प्रति प्रेम दर्शाते हुए कहा गया है कि नायिका शकुन्तला सर्वप्रथम तपोवन के वृक्षो, बनलाताओ को जल से सीचिंत करती थी, तत्पश्चात् ही वह स्वयं जलपान करती थी। अलंकरण प्रिय होते हुए भी उनके प्रति स्नेह के कारण उनके नवपल्लवों को नही तोड़ती थी। वृक्ष वनलताओं की पुष्पोत्पत्ति के समय वह उत्सव के समान समाज आनन्दित होती थी। शकुन्तला के विदाई के समय महर्षि कण्व द्वारा वनलताओं को बताया गया है कि वह शकुन्तला जो तुम्हारे प्रति पूर्णरूप से समर्पित थी अब वह इस तपोवन से हस्तिनापुर राजा दुष्यन्त के पास प्रेम विवाह करने जा रही है। आप सभी उसे जाने की अनुमति प्रदान करें। प्रत्युत्तर में कोयल पक्षी के शब्दों द्वारा नायिका शाकुन्तला को तपोवन के बन्धु वृक्ष जाने की अनुमति देते हुए आशीर्वाद प्रदान करते है कि, नायिका का मार्ग कमलिजियों से हरे-भरे तालाबों द्वारा मनोहर, छायादार वृक्षों वाला जहाँ सूर्य का ताप कम हो, कमल पराग के समान कोमल धूलिकणों वाला अनुकूल पवन से युक्त कल्याणकारी मार्ग होवे।

बन्धुओं के समान स्नेह करने वाली नायिका को तपोवन के देवताओं द्वारा आशीर्वाद प्रदान चित्रण गया है। कवि ने नायिका का बनलाताओं के साथ संजीव एवं मानवीय चिता किया है। इनके संवाद से ऐसा लगता है कि शकुन्तला का इन सभी प्रकृति में उत्पन्न वन लताओं, वृक्षो, पौधों, पुष्पों से रक्त सम्बन्ध है। उसके जाने पर वहाँ निर्वासित मृगियों ने कुशों के ग्रासों का त्याग कर दिया है, एवं मयूरों ने नृत्य त्याग दिया है।

"संकल्पित प्रथममेव मया तवार्थे,
भर्तारमात्मसदृशं सुकृतैर्गतात्वम्।
चूतेन संश्रिहतवती नवमालिकेय-
मस्यामहं त्वयि च संप्रति वीतचिन्तः।।"[9]

शकुन्तला द्वारा तपोवन में नवमालिका को पोषित किया गया था। अब वह भी आम्रवृक्ष के ऊपर लिपटकर उसके आश्रय में चली गई है। इस पर महर्षि कश्यप कहते है कि शकुन्तला ने वनलताओं को पोषित कर उन्हें दीर्घजीवन प्रदान किया है, और स्वयं के लिए भी एक सुयोग्य घर का चयन कर मुझे चिन्तामुक्त कर दिया है। शकुन्तला वनज्योत्सनाओं से बहुत प्रेम करती है। वह अपनी दोनों सखियों अनुसूया एवं प्रियंवदा से कहती है कि मेरे परिगृह जाने के बाद तुम दोनों इनका मेरी तरह ही ध्यान रखना अब यह तुम दोनों की धरोहर है-

"वनज्योत्सने चूतसंगतापि मां प्रत्यालिंगेतो गताभिः शाखाबाहुभिः
अद्यप्रभृति दूरपरिवर्तिनी भविष्यामि।।"[10]

शकुन्तला जब अपने पतिगृहं की ओर से जाने लगती है, तो वह अपने पिता कश्यप ऋषि से कहती है, पिता जी ! मैं लता वनज्योत्सना बहन से मिलकर अनुमति ले लेती हूँ। नायिका लता के समीप जाकर कहती है वनज्योत्सना तुम अपनी शाखारूपी भुजाओं द्वारा मेरा आलिंगन करो। आज से गै तुमसे दूर रहने जा रही हूँ। अब तुम्हारा ध्यान मेरी सखिया रखेंगी ऋषि कहते हैं कि हे पुत्र मैं जानता हूँ कि इन्हें तुम अपनी सखी बहिनों जैसा ही प्रेम करती हो। तुम्हें इन्हें त्यागकर पतिगृह जाना पीड़ा दे रहा है। महाकवि कालिदास ने अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक में शकुन्तला एवं वनज्योत्सना का सुन्दर एवं भावात्मक वर्णन किया है। ऐसा प्रतीत हों जैसे दोनों सगी बहने एक दूसरे से बिछड़ रही है।

यस्य त्वया व्रणाविरोपणमिंगुदीनां तैलं, न्यषिच्यत मुखे कुशसूचिविद्धे।
श्यामाकमुष्टि परिवार्धितको जघाति, सोऽयं न पुत्रकृतकः पदवीं मृगस्ते।।[11]

नायिका शकुन्तला वनज्योत्सना के साथ ही वन्यजीवों को भी प्रेम करती है। शकुन्तला महर्षि कण्व के आश्रम में रहती। आश्रम प्रकृति की गोद में बसा हुआ है। उसी के समीप एक हिरणी विचरण करती थी जो गर्भधारण के कारण मन्द गति वाली हो गई है। नायिका पिता से कहती है। जब कुशलता पूर्वक प्रसव कर ले तो मुझे इसकी

सुखद व प्रिय समाचार अवश्य भेजियेगा, कवि द्वारा शकुन्तला का प्रकृति वन्य जीवों के प्रति भी अपार स्नेह दर्शाया गया है-

नवेकस्मिन्दिवसे नवमालिकामण्ऽये नालिनीपत्रभाजनगतमुन्दकं
तवं हस्ते सन्निहितमासीत्।।[12]

जब शकुन्तला पतिगृह जाती है, तब दुर्वासा ऋषि के शाप के कारण दुष्यन्त नायिका शाकुन्तला को भूल जाता है। तब नवमालिका के कुंज में जब राजा उससे मिलने गया था। कमलिनि के पत्ते के दोने में स्थित जल को अपने हाथ में रखा था। उस समय को स्मरण करवाने का प्रयास कर रही है। कवि द्वारा बताया गया है कि नायिका ने अपने नायक प्रेमी से मिलने भी नवमालिका कुंज बिहार में किया था। वह प्रकृति से अत्यधिक प्रेम करती है। नायक के साथ प्रेम चित्रण में प्रकृति के तत्व उसके सहायक है।

सन्दर्भ सूची :

1. अभिज्ञानशाकुन्तलम् - 1/17 पृ0 सं0 98.
2. अभिज्ञानशाकुन्तलम् - 3/6 पृ0 सं0 136.
3. अभिज्ञानशाकुन्तलम् - अनुसूया / प्रियंवदा कथन पृ0 सं0 158.
4. अभिज्ञान शाकुन्तलम् - 3/4 पृ0 सं0 160.
5. अभिज्ञानशाकुन्तलम् - 4/4, पृ0 सं0 162.
6. अभिज्ञानशाकुन्तलम्- 4/5, पृ0 सं0 166.
7. अभिज्ञानशाकुन्तलम् - 4/6 पृ0 सं 166.
8. अभिज्ञानशाकुन्तलम् - 4/9 पृ0 सं 170.
9. अभिज्ञानशाकुन्तलम् - 4/9 पृ0 सं0 170.
10. अभिज्ञानशाकुन्तलम् -शाकुन्तला कथनम् पृ0 सं0 172.
11. अभिज्ञानशाकुन्तलम्- 4/4 पृ0 सं0 174.
12. अभिज्ञानशाकुन्तलम् -शकुन्तला कथनम्, पृ0 सं0 200.

•